संपादक का पत्र

प्रभु की स्तुति हो! बिल्कुल नया महीना आ गया है और मैं प्रार्थना करती हूं और आशा करती हूं कि हमारे प्रभु का भरपूर आशीष रोज़ ऑफ शेरोन चर्च के सभी सदस्यों पर बरसता रहे।

हमारा जीवित प्रभु आग है – भस्म करने वाली आग, साथ ही शुद्ध करने वाली आग भी है! नबी एलिय्याह ने प्रार्थना की, और प्रभु ने मनुष्य द्वारा किए गए बलिदान को भस्म करने के लिए स्वर्ग से आग भेजी। लेकिन जिस आग को जलाने के लिए हमारा परमेश्वर यीशु मसीह आए है वह दुनिया की सभी प्रकार की आग से अलग है। यह हमें नष्ट नहीं करता बल्कि हमें भीतर से शुद्ध करता है। मत्ती 3:11 ''मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।'' यदि हम अपने प्रभु द्वारा भेजी गई आग को स्वागत योग्य हृदय से स्वीकार करते हैं, तो हमारा जीवन 360 डिग्री में बदल सकता है। यीशु ने इस धरती पर बड़ी करुणा के साथ मानव जाति की सेवा की और इस दुनिया के लिए उनकी इच्छा क्या है? लूका 12:49 ''मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ; और क्या चाहता हूँ केवल यह कि अभी सुलग जाती!'' वह चाहते है कि आग हमारे भीतर फैले, ताकि हम अंदर से शुद्ध हो सकें और एक नई रचना बन सकें!

परमेश्वर वादा करते है योएल 2:28 में ''उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तुम्हारे बेट–बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।''

हमारा परमेश्वर पक्षपाती परमेश्वर नहीं है, वह अपने सभी बच्चों पर अपनी आत्मा उँडेलना चाहते है, चाहे वे जवान हों या बूढ़े, बेटे हों या बेटियाँ, या अमीर हों या गरीब। वह सभा के आकार के अनुसार आशीष नहीं देते है। वह सभा की प्यास के अनुसार आशीष देते है। आज जो भी प्यासा है, प्रभु उसकी प्यास बुझाने के लिए तैयार हैं।

पहले दिनों की तरह, आज भी, प्रभु परमेश्वर हमारे चारों ओर आग की दीवार की तरह हैं। भविष्य अप्रत्याशित है, और प्रभु की कृपा और कवच के बिना, हम कुछ नहीं कर सकते। लेकिन हमारे चारों ओर पवित्र आग की दीवार के रूप में प्रभु परमेश्वर के साथ, हम जानते हैं कि हम शैतान के सभी कार्यों से सुरक्षित रहेंगे।

इसलिए, प्रभु के प्यारे बच्चों, हमारे प्रभु यीशु ने हममें से प्रत्येक के लिए जो सीमाएं निर्धारित की हैं, उनके भीतर रहने के लिए हर संभव तरीके से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें। यदि हम इस सीमा के भीतर रहते हैं, तो कोई भी बुराई हमें, हमारे प्रियजनों को, यहाँ तक कि हमारे आशीषों को भी कभी छू नहीं सकती!

प्रभु आपको आज और हमेशा आशीष दें!

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

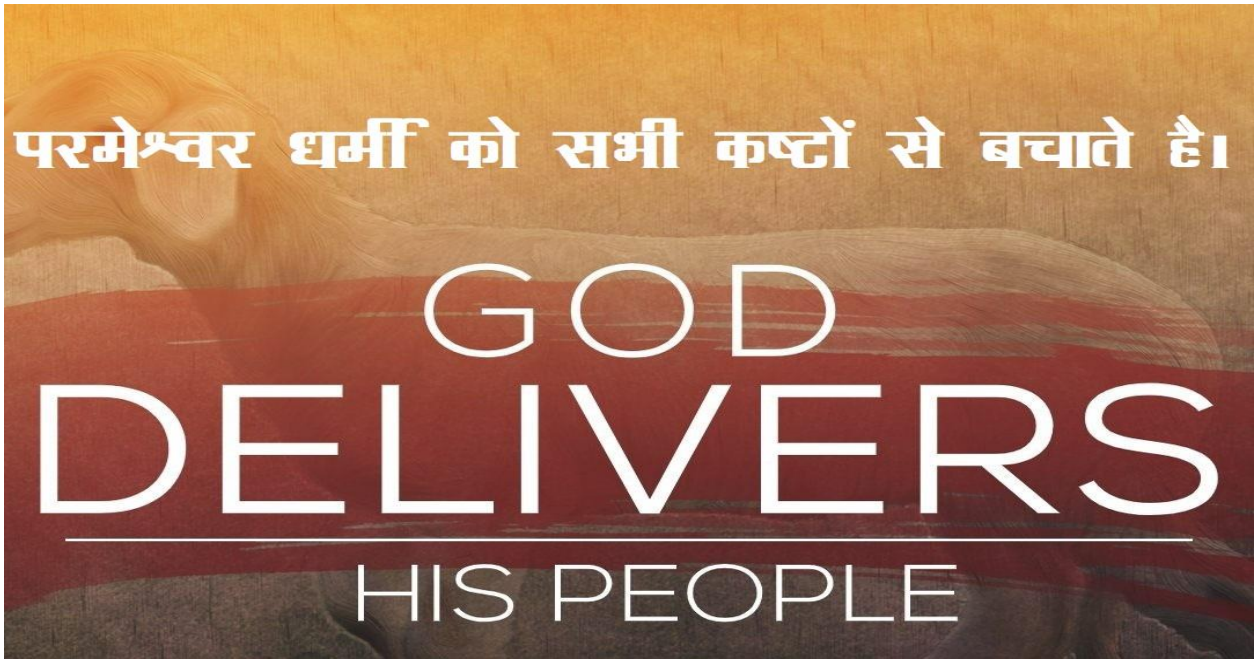

उत्पत्ति 18:25 ''इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्मी को भी मार डाले, और धर्मी और दुष्ट दोनों की एक ही दशा हो। यह तुझ से दूर रहे। क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?'' हमारा प्रभु सारी पृथ्वी का न्यायी है। वह हममें से हर एक का न्याय करेंगे। यीशु अपने पिता परमेश्वर से बात करते हैं यूहन्ना 17:25 में ''हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों, कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा।'' यीशु अपने पिता को 'धर्मी पिता' कहते हैं। वह पूरी धार्मिकता के साथ पृथ्वी का न्याय करेंगे। उनका प्रत्येक कार्य धर्म और सच्चाई से होता है। जब यीशु अपने पिता से प्रार्थना करते है, तो वह उन्हें 'धर्मी पिता' कहते है। आइए देखें कि यीशु मसीह के बारे में क्या कहा गया है। 1 कुरिन्थियों 1:30 में ''परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा;'' हमारा प्रभु यीशु मसीह सब कुछ पूर्ण धार्मिकता से करते है। उनके माध्यम से, हम ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता और मुक्ति प्राप्त करते हैं। पिता परमेश्वर और परमेश्वर का पुत्र दोनों 'धर्मी' हैं, और वे उम्मीद करते हैं कि उनके बच्चे भी 'धर्मी' हों। प्रकाशितवाक्य 22:11–12 ''जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है; वह पवित्र बना रहे।" "देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार

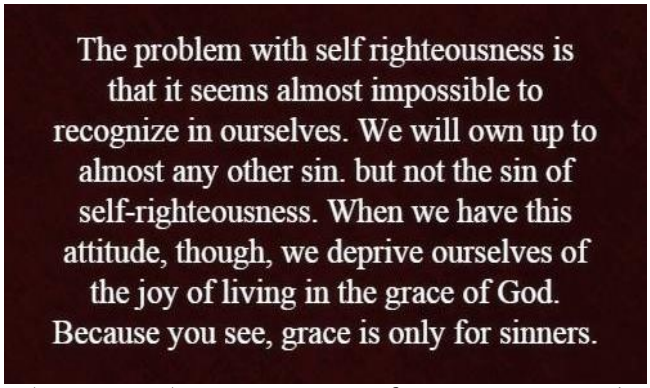

बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।'' हमारा परमेश्वर हमसे अपेक्षा करते है कि हम शुद्ध, पवित्र, बुद्धिमान और धर्मी बने रहें, क्योंकि उन्होंने हमें हमारे पापों से बचाया है और हमें गड्ढे से बाहर निकाला है। वह हमें हमारा प्रतिफल देंगे। प्रभु ने हमें बचाया है ताकि हम उनकी धार्मिकता में दृढ़ता से रहें। रोमियों 6:18 ''और पाप से छुड़ाए जाकर धार्मिकता के दास हो गए।'' प्रभु की

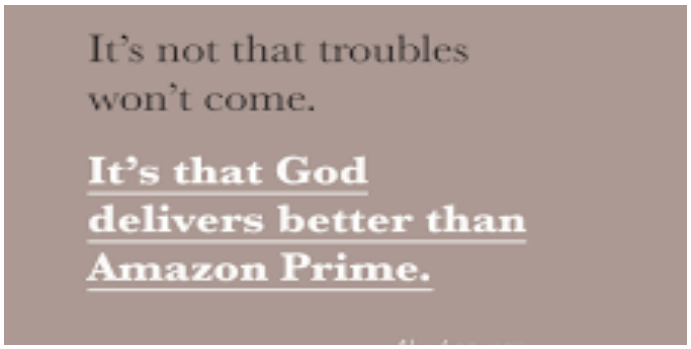

इच्छा है कि हम अपने प्रत्येक कार्य में धार्मिक बनें रहे। वह चाहते है कि हम धार्मिकता, सच्चाई और बुद्धिमानी से उन्नति करे।

भजन संहिता 34:19 ''धर्मी पर बहुत सी विपत्तियाँ पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सबसे मुक्त करता है।'' धर्मी को बहुत सी विपत्तियाँ होती हैं, परन्तु विपत्ति के समय हमारी आशा परमेश्वर पर केन्द्रित होनी चाहिए, क्योंकि वही धर्मी को बचाएगा। हमारे जीवन में, हमारे कार्य और हमारा विश्वास दोनों ही परमेश्वर की महिमा करते हैं। यदि हमारे कार्य प्रभु की इच्छा के अनुसार नहीं हैं, तो दृढ़ विश्वास वाला व्यक्ति निष्फल है। हम शक्तिशाली विश्वासी हो सकते हैं, लेकिन यदि हमारे कार्य हमारे विश्वास के अनुसार नहीं हैं, तो हमारा विश्वास प्रभु के योग्य नहीं है। हमारे कार्य और विश्वास दोनों समान रूप से मजबूत होने चाहिए, जिससे प्रभु की महिमा हो। इब्रानियों 11:33 ''इन्होंने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धर्म के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ प्राप्त कीं; सिंहों के मुँह बन्द किए;'' विश्वास और कार्यों के द्वारा, परमेश्वर की संतानों ने राज्य जीते और सिंहों के मुँह बन्द किए। यदि कोई युद्ध है, और हम युद्ध लड़ने के लिए आगे नहीं बढ़ते हैं, और इसके बजाय पीछे रहकर प्रार्थना करते हैं कि दूसरे युद्ध जीतें, तो ऐसे विश्वास का क्या फायदा? हम हार जाएँगे। इसलिए युद्ध जीतने के लिए विश्वास के साथ–साथ हमारे कार्य भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि हमारा विश्वास और कार्य ही सिंहों के मुँह बन्द कर सकते हैं। यिर्मयाह 23:6 ''उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे। और यहोवा उसका नाम "यहोवा हमारी धार्मिकता" रखेगा।'' प्रभु ने हमें अपना नाम 'प्रभु हमारी धार्मिकता' दिया है। कल्पना कीजिए कि अगर प्रभु ने क्रूस पर हमारे लिए अपना जीवन बलिदान नहीं किया होता, तो आज हम किस लायक होते? आज हमारा जीवन कैसा होता? भविष्यवक्ता यशायाह बोलता हैं यशायाह 64:6 में ''हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के सब पत्ते के समान मुर्झा जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु के समान उड़ा दिया है।'' हम परमेश्वर के सामने गंदे चिथड़े के सामान हैं, और यदि हमारा जीवन पाप

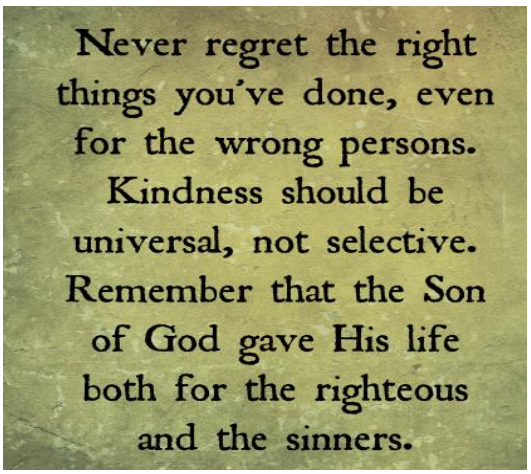

में जारी रहता तो हम हवा से सूखे पत्तों की तरह उड़ जाते। हमारे धर्मी परमेश्वर के न्याय के लिए धन्यवाद, हम गंदगी और कालकोठरी से बच गए हैं। उन्होंने हमें आग में झोंके जाने वाले सूखे पत्तों के समान होने से बचाया है। नबी यशायाह कहते हैं, *'कल्पना करें कि अगर प्रभु ने हम पर अपनी कृपा और दया नहीं दिखाई तो हमारा क्या होगा, क्योंकि तब हम इस पापी दुनिया में नष्ट हो जाएंगे। क्योंकि परमेश्वर ने हम पर अपनी कृपा दिखाई, हम आज उनकी धार्मिकता में जी रहे हैं।"* जैसा कि प्रभु कहते हैं प्रकाशितवाक्य 22:11–12 में ''जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है; वह पवित्र बना रहे।" "देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।'' मानवजाति के लिए परमेश्वर की इच्छा यह है कि जो लोग पाप में जी रहे हैं वे ऐसा करना जारी रखें, लेकिन जो लोग अपने पापों से छुटकारा पा चुके हैं वे धार्मिकता में अपना जीवन व्यतीत करें।

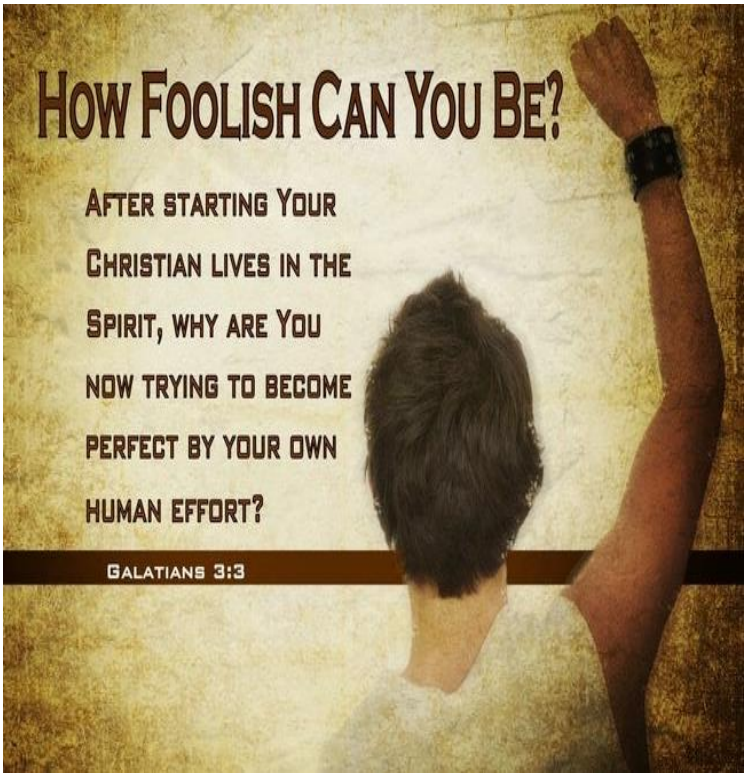

अय्यूब कहता है, अय्यूब 9:2 में ''"मैं निश्चय जानता हूँ कि बात ऐसी ही है; परन्तु मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में कैसे धर्मी ठहर सकता है?'' मनुष्य परमेश्वर के समक्ष धर्मी कैसे ठहर सकता है? क्योंकि प्रभु ने हमारे लिए अपने इकलौते बेटे को इस दुनिया में भेजा है, हमारे लिए उनके बेटे के इस बलिदान ने हमें धर्मी और उनके सामने खड़े होने के योग्य बना दिया है। अन्यथा, हम परमेश्वर के सामने सिर्फ गंदे चिथड़े हैं। परमेश्वर ने अपने बहुमूल्य लहू से हमारे पापों और गंदगी को धोया और शुद्ध किया और इस प्रकार हमें पवित्र किया, जिससे हम उनके सामने खड़े होने के योग्य बन गये। अय्यूब 15:14 ''मनुष्य है क्या कि वह निष्कलंक हो? या जो स्त्री से उत्पन्न हुआ वह है क्या कि निर्दोष हो सके?'' मनुष्य क्या है कि वह निर्दोष है? हममें से कोई भी अपनी माँ के गर्भ से धर्मी और निष्पाप पैदा नहीं हुआ। पाप बच्चे के लहू में होता है, इसलिए बच्चा जन्म से ही पापी होता है। रोमियों 3:20 ''क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है।'' व्यवस्था के कार्यों के द्वारा कोई भी परमेश्वर की दृष्टि में न्यायी या धर्मी नहीं ठहर सकता, क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप का ज्ञान होता है। यह केवल यीशु के लहू से है कि मानव जाति को पवित्र किया जा सकता है और उनके पापों से छुटकारा दिलाया जा सकता है। इसके द्वारा, आज हम परमपिता परमेश्वर

के सामने खड़े होने के योग्य बनाये गये हैं। रोमियों 3:10 ''जैसा लिखा है : "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।'' ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं है जो धर्मी हो! इसलिए यीशु को कलवारी के क्रूस पर अपना जीवन बलिदान करने के लिए इस दुनिया में भेजे गए थे। वह तीसरे दिन फिर जी उठे और हमें अनन्त जीवन दिया। आज, उनके माध्यम से, हमारा विश्वास और हमारे कार्य हमें धर्मी बनाते हैं और परमपिता परमेश्वर के सामने खड़े होने के योग्य बनाते हैं। बाइबल स्पष्ट रूप से कहता है रोमियों 3:24 में ''परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।'' हमें यीशु मसीह के द्वारा स्वतंत्र रूप से छुटकारा दिया गया ताकि हम धर्मी बन सकें। हमने अपने पापों के माध्यम से प्रभु को दुःख और दर्द के अलावा कुछ नहीं दिया है। फिर भी परमेश्वर ने हमारे लिए अपना पुत्र खुशी से दे दिया।

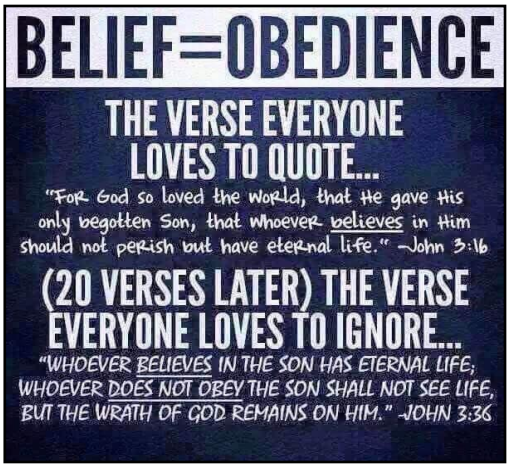

हम अक्सर मॉल्स में देखते हैं कि हर जगह ऑफर होते हैं। *एक खरीदें एक मुफ़्त पायें!* यहां, जब तक आप एक नहीं खरीदते, आपको एक मुफ्त नहीं मिल सकता। परन्तु हमारे परमेश्वर ने हमें अपना पुत्र मुफ़्त में दिया है, और हमें केवल उस पर विश्वास करने की आवश्यकता है। केवल यीशु के माध्यम से, हमारे जीवन में धार्मिकता और पवित्रता है। प्रभु यीशु कहते हैं प्रकाशितवाक्य 22:11–12 में ''जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है; वह पवित्र बना रहे।" "देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।'' याद रखें कि हमारे विश्वास के साथ–साथ प्रभु के लिए *'अच्छे काम'* करना भी जरूरी है।

हमारा परमेश्वर सारी पृथ्वी का न्यायी है। प्रकाशितवाक्य 19:11 ''फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और युद्ध करता है।'' हमारा प्रभु विश्वासयोग्य और सच्चे है, और धर्म से न्याय करते और युद्ध करते है। परमेश्वर हमारे विश्वास और अच्छे कार्यों को देखेंगे और उसके अनुसार हमारा न्याय करेंगे। हमें इस संसार में सदैव धर्मपूर्वक जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

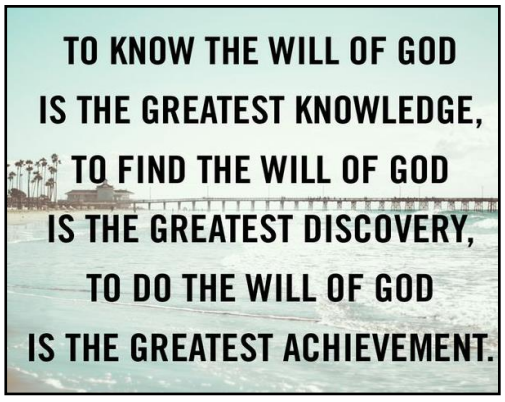

दाऊद कहता है, भजन संहिता 40:11 में ''हे यहोवा, तू भी अपनी बड़ी दया मुझ पर से न हटा ले, तेरी करुणा और सत्यता से निरन्तर मेरी रक्षा होती रहे!'' दाऊद ने प्रभु से अनुरोध किया कि वह उनकी प्रेममय दयालुता और सच्चाई को लगातार बनाए रखे। दाऊद एक अच्छा चरवाहा था। जब गोलियत ने इस्राएलियों

को चुनौती दी, तो दाऊद राजा शाऊल के सामने खड़ा हुआ और पूछा कि गोलियत इस्राएलियों को चुनौती देने और उन्हें परेशान करने का साहस कैसे कर सकता है। राजा शाऊल ने दाऊद को याद दिलाया कि वह अभी युवा है और वह गोलियत से लड़ने में सक्षम नहीं होगा। दाऊद ने राजा शाऊल को बताया कि कैसे उसने अपनी भेड़ों की रक्षा के लिए दो अलग–अलग मौकों पर एक शेर और भालू से लड़ाई की थी। जब एक चरवाहा अपनी भेड़ों की रक्षा के लिए लड़ता है, तो हमलावर आम तौर पर चरवाहे पर हमला कर देता है, और दाऊद के जीवन में भी यही हुआ। हमारे जीवन में भी, जब हम बंधन में फंसे लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं, तो शैतान, एक 'गर्जने वाले सिंह', अचानक उद्धारक पर झपट पड़ता है। चरवाहा बनना आसान नहीं है, क्योंकि शत्रु चरवाहे पर झपटता है, लेकिन अंत में जीत प्रभु की ही होती है। प्रकाशितवाक्य 5:5 ''इस पर उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, "मत रो; देख, यहूदा के गोत्र का वह सिंह जो दाऊद का मूल है, उस पुस्तक को खोलने और उसकी सातों मुहरें तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है।'' हमारा प्रभु 'यहूदा का सिंह' है। यदि हमारा पिता प्रभु यहूदा का सिंह है, तो हम भी सिंह की तरह हैं और हमें सिंह की तरह शैतान से लड़ना चाहिए। सिंह चूहे को जन्म नहीं देगा. हम सभी प्रभु की संतान हैं, 'यहूदा के सिंह', इसलिए हम सभी सिंह हैं, और हमें जोश के साथ शैतान से लड़ना चाहिए। जो लोग अच्छे चरवाहे के खिलाफ बोलते हैं वे 'यहूदा के सिंह' को नहीं जानते हैं। जब हम प्रभु के लिए अच्छे काम करते हैं, तो प्रभु की कृपा हमेशा हम पर बनी रहती है।

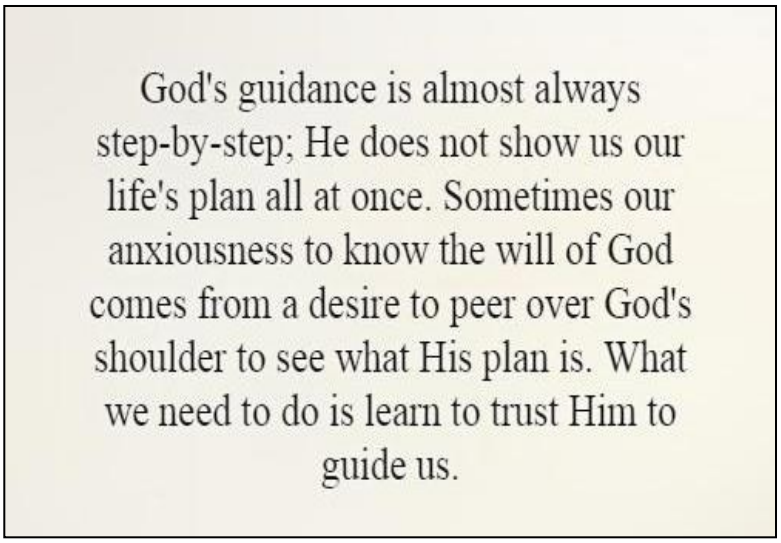

2 कुरिन्थियों 5:21 ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।'' परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए अपने पापरहित पुत्र का बलिदान दिया ताकि हम यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें। परमेश्वर अधर्मी की प्रार्थना नहीं सुनते, परन्तु धर्मी की प्रार्थना सुनते है। याकूब 5:17 ''एलिय्याह भी तो हमारे समान दुःख–सुख भोगी मनुष्य था; और उसने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की कि मेंह न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह नहीं बरसा।'' एलिय्याह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने अपने जीवन में कष्ट सहे, लेकिन वह धर्मी था, इसलिए, जब उसने परमेश्वर से प्रार्थना की कि इस्राएल में बारिश न हो, तो परमेश्वर ने साढ़े तीन साल तक बारिश रोक रखी थी। यहोशू ने प्रभु से प्रार्थना की कि वह सूर्य को डूबने से रोके ताकि वह युद्ध समाप्त कर सके। यहोशू 10:12–13 ''उस समय, अर्थात् जिस दिन यहोवा ने एमोरियों को इस्राएलियों के वश में कर दिया, उस दिन यहोशू ने यहोवा से इस्राएलियों के देखते इस प्रकार कहा, "हे सूर्य, तू गिबोन

पर, और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की तराई के ऊपर थमा रह।" और सूर्य उस समय तक थमा रहा, और चन्द्रमा उस समय तक ठहरा रहा, जब तक उस जाति के लोगों ने अपने शत्रुओं से बदला न लिया। क्या यह बात याशार नामक पुस्तक में नहीं लिखी है कि सूर्य आकाशमण्डल के बीचोंबीच ठहरा रहा, और लगभग चार पहर तक न डूबा?'' यहोशू ने दिन के उजाले के लिए और समय मांगा, और प्रभु ने सूर्य को डूबने से रोकते हुए उसकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। प्रभु धर्मियों की प्रार्थना सुनते है। प्रभु ने निश्चित रूप से मनुष्य को इस धरती पर प्रभुत्व दिया है, लेकिन हमें उनके सामने धर्मी होना चाहिए। यशायाह 45:11 ''यहोवा जो इस्राएल का पवित्र और उसका बनानेवाला है वह यों कहता है, "क्या तुम आनेवाली घटनाएँ मुझ से पूछोगे? क्या मेरे पुत्रों और मेरे कामों के विषय मुझे आज्ञा दोगे?'' यहूदा का सिंह अपने लोगों से कहते है कि वे उन्हें आदेश दें और देखें कि वह क्या कर सकते है। जिस प्रकार एलिय्याह और यहोशू ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया, उसी प्रकार, जब हम विश्वास के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, तो वह निश्चित रूप से हमारी प्रार्थनाओं को सुनेंगे और उत्तर देंगे।

A season of suffering is a small assignment when compared to the reward. Rather than begrudge your problem, explore it. Ponder it. And most of all, use it. Use it to the glory of God.

परमेश्वर कहते हैं, *'ज्ञान की कमी के कारण मेरे लोग संसार में नष्ट हो गए हैं।'* जो लोग यीशु के लहू से धोए गए हैं वे चूहों की तरह नहीं, बल्कि सिंहों की तरह व्यवहार करेंगे। यीशु कहते हैं, यूहन्ना 15:7 में ''यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।'' जब हम प्रभु और उनके वचन से जुड़ जाते हैं, तो हमें बहुत कुछ मिलेगा। पुराने समय में हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो विश्वास के साथ–साथ प्रभु के लिए अच्छे काम भी करते थे, जिसकी वजह से प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनी और जवाब दिया। आज भी प्रभु यही चाहते है कि हमारा कार्य और विश्वास उनकी ओर हो। तब, उनकी इच्छा के अनुसार, हमारे जीवन में उनकी कृपा की वर्षा की कोई सीमा नहीं होगी। हम जानते हैं कि कैसे दानिय्येल ने राजा नबूकदनेस्सर द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना न करने का आदेश जारी करने के बाद भी जीवित परमेश्वर की आराधना करना जारी रखा। यह शैतान द्वारा धर्मी दानिय्येल को फंसाने की एक योजना थी। परन्तु दानिय्येल को इसकी कोई परवाह न थी, और वह अपनी खिड़कियाँ खोलकर यरूशलेम की ओर दिन में तीन बार परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए प्रार्थना करता था। दानिय्येल को आज्ञा के अनुसार दण्ड दिया गया और सिंहों की मांद में डाल दिया गया। अगली सुबह राजा नबूकदनेस्सर, दानिय्येल को मरा हुआ पाने की आशा में था, लेकिन उन्होंने उसे अपनी मांद में सिंहों के बीच स्वस्थ और जीवित पाया। उसने मांद के मुंह से चिल्लाकर दानिय्येल से पूछा कि

क्या दानिय्येल का परमेश्वर, जिसकी वह लगातार आराधना करता था, उसे बचाने में सक्षम है। राजा की प्रसन्नता के लिए, दानिय्येल ने उत्तर दिया कि क्योंकि उसे प्रभु द्वारा निर्दोष और धर्मी पाया गया था, इसलिए प्रभु ने उसे सिंहों के मुंह से बचाया। इस दुनिया में, लोग हमारे खिलाफ कहानियाँ बनाते रहेंगे, लेकिन हमें अपने जीवन में प्रभु के लिए अच्छे काम करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

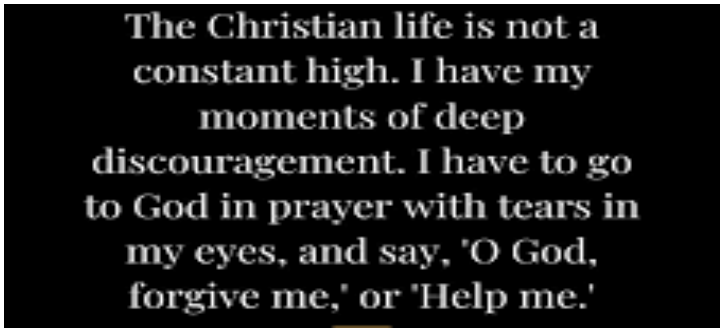

अय्यूब 36:7 ''वह धर्मियों से अपनी आँखें नहीं फेरता, वरन् उनको राजाओं के संग सदा के लिये सिंहासन पर बैठाता है, और वे ऊँचे पद को प्राप्त करते हैं।'' हाँ, परमेश्वर धर्मी से अपनी दृष्टि नहीं हटाते, और वह धर्मी को राजा के सिंहासन पर बैठाते है। प्रभु जो आशीष देते है वह न केवल हमारे वर्तमान के लिए होता है, बल्कि वह आने वाली पीढ़ियों तक भी उत्तम रहता है। इसलिए, परमेश्वर का वादा भविष्य के समय के लिए भी सत्य है। नीतिवचन 20:7 ''धर्मी जो खराई से चलता रहता है, उसके पीछे उसके बाल–बच्चे धन्य होते हैं।'' जब हम धार्मिक जीवन जीते हैं, तो आशीष सिर्फ हम तक ही नहीं रुकती, वे पीढ़ी–दर–पीढ़ी भी मिलती रहती हैं। यह महत्वपूर्ण है कि माता–पिता के रूप में हमें धर्मी होना चाहिए, क्योंकि हमारे बच्चे धन्य होंगे। अगर हम बुरे हैं तो हम अपने बच्चों से अच्छी चीजों की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? माता–पिता के रूप में, हमें सही ढंग से जीवन जीना चाहिए। हमारे कार्य और विश्वास प्रभु के प्रति होना चाहिए, तभी हमारी संतानें भी उनका अनुसरण करेंगी। यदि नहीं तो अधर्मी जड़ से कटकर नष्ट हो जायेंगे। उत्पत्ति 18:25 ''इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्मी को भी मार डाले, और धर्मी और दुष्ट दोनों की एक ही दशा हो। यह तुझ से दूर रहे। क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?''

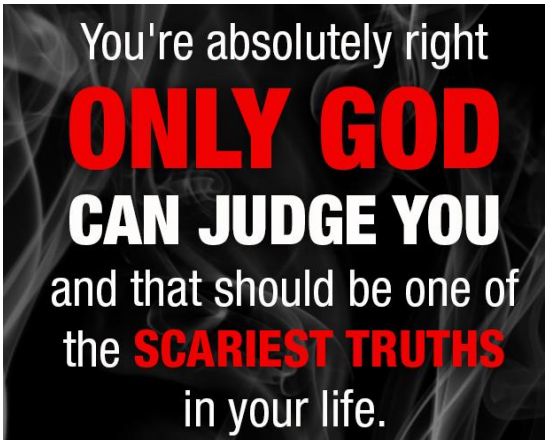

हमारा प्रभु 'सारी पृथ्वी का न्यायाधीश' है। वह सभी कार्यों का न्याय करता है, और उनके कार्य हमेशा महान और शक्तिशाली होते हैं। वह हममें से हर एक का न्याय करेंगे। हमारे प्रभु नहीं बदलते, बल्कि हमें बदलना होगा, नहीं तो हम नष्ट हो जायेंगे। यदि हम अच्छे हैं तो हमारा आशीष पीढ़ी–दर–पीढ़ी बना रहेगा। दाऊद भजन संहिता 106:3 में कहता है, ''क्या ही धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते, और हर समय धर्म के काम करते हैं!'' धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते हैं और हर समय धर्म के काम करते हैं। भजन संहिता 112:2 ''उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा; सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी।'' वचन हमारे लिए नहीं बदलेगा, इसलिए हममें से प्रत्येक के लिए वचन के माध्यम से बदलना महत्वपूर्ण है!

आज का दिन यहोवा ने बनाया है, हम इस में आनन्द करेंगे। दाऊद ने अपने जीवन में यह सब गहराई से अनुभव किया। भजन संहिता 37:25 ''मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूँ; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े माँगते देखा है।'' प्रभु ने हमें अपना परिवार बनाया है। हमारा प्रयास हमेशा उनका परिवार बनकर रहने का होना चाहिए। प्रभु का इस पृथ्वी के साथ–साथ स्वर्ग में भी प्रभुत्व है। वह पक्षपात करनेवाले परमेश्वर नहीं है; वह पृथ्वी का न्याय 'धर्म से' करेंगे। वह धर्मी और अधर्मी का न्याय निष्पक्षता से करेंगे। इसलिए, आइए आज हम प्रभु के सामने खुद को विनम्र करें और अपने जीवन को बेहतरी के लिए बदलें।

मैं प्रार्थना करती हूं कि यह संदेश हममें से प्रत्येक के लिए आशीष लाए।

पास्टर सरोजा म।